वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :2 अंक : 334 | सोमवार 3 अप्रैल 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

महावीर जयंती आज

भक्तिमय कार्यक्रमों की बहेंगी बहार

चंद्रेश जैन. शाबाश इंडिया

श्रीमहावीरजी। श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में चल रहे भगवान महावीर के वार्षिक मेले के अवसर पर रविवार को प्रातः काल से ही दर्जनों धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए जिनमें देशभर से आए जेनोत्तरो ने हिस्सा लिया। प्रबंधक नेमी कुमार पाटनी ने बताया कि भगवान महावीर के वार्षिक मेले के दूसरे दिन प्रातः काल भगवान महावीर का प्रक्षाल, पूजन विधान, भजन, सामूहिक आरती, शास्त्र प्रवचन कार्यक्रम आयोजित हुए जिनमें पंडित मुकेश जैन शास्त्री ने विधि-विधान और जैन परंपराओं के अनुसार भगवान महावीर के पूजन विधान परंपराओं को संपन्न कराया। क्षेत्र में विराजमान भगवान महावीर की मुंगवर्णी प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध पवित्र व शांति तीर्थ क्षेत्र श्री दिगंबर जैन अतिशय श्री महावीरजी के वार्षिक मेले में दिनभर भक्तिमय कार्यक्रमों की बहार रही। जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्म कल्याणक महोत्सव पर सोमवार को प्रातः काल से रात्रि तक भक्ति मय कार्यक्रमों की बहार रहेगी। भगवान महावीर के 2621वे जन्म कल्याणक महोत्सव के मौके पर श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी में प्रातः 6:00 कटला प्रांगण से प्रभात फेरी शुरू होगी जो कस्बे के मुख्य मार्गों से होती हुई मंदिर पहुंचेगी 7:30 बजे कटला प्रांगण में झंडारोहण कार्यक्रम आयोजित होगा प्रातः 8:15 कटला प्रांगण से जल यात्रा शुरू होकर गंभीर नदी के तट पर बने उधान पहुंचेगी जहां कलशों की बोली लगाई जाएगी। प्रातः 10 बजे स्थानीय स्कूल के विद्यार्थियों को मोदक वितरण अस्पताल के मरीजों ओर हिण्डौन जेल में बंद कैदियों को फल वितरण किया जाएगा। मध्यान्ह 12 बजे वीर संगीत मंडल जयपुर के सहयोग से सामूहिक पूजन व विधान कार्यक्रम आयोजित होंगे अपरहण 3:00 बजे भगवान महावीर के कलसा अभिषेक किए जाएंगे। अपराहन 4:00 जिला कलेक्टर अंकित कुमार सिंह चाँदनपुर के महावीर प्रदर्शनी का उद्घाटन करेंगे ।मौके पर ही दिव्यांगों को ट्राई साइकिल वैसाखी ,कैलिपर्स तथा असमर्थ विधवा महिलाओं को हाथ की सिलाई मशीनें भी भेंट करेंगे ।साय 7:00 बजे सामूहिक आरती, शास्त्र प्रवचन एवं रात्रि 7:30 बजे श्री दिगंबर जैन आदर्श महिला महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम ,रात्रि 8:00 बजे पर्यटन कला एवं संस्कृति विभाग राजस्थान के सौजन्य से राजस्थानी सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम आयोजित होंगे।

भगवान महावीर के 2622 वे जन्म कल्याणक की
हार्दिक शुभकामनाएं
राकेश-समता गोदिका एवं समस्त शाबाश इंडिया परिवार

सोजत-नवपद आंयबिल ओली के पंचम दिवस

तप जप के साथ भाव शुद्ध होंगे तभी इस आत्मा का उध्दार हो सकता है। प्रवर्तक सुकन मुनि महाराज

सोजत. शाबाश इंडिया। तप जप के साथ भाव शुध्द होगे तभी आत्मा का उध्दार हो सकता है। नवपद ओली आंयबिल तपस्या करने वाले सभी तपस्वियों और श्रध्दालूओ को मरूधर केसरी गुरूसेवा समिति मे प्रवर्तक सुकन मुनि महाराज ने धर्मसंदेश प्रदान करतें हुये कहा कि तप जप करने साथ मानव के जीवन मे सहनसिलता व समभाव अगर आगये तो अपने जीवन को उज्जवल और आत्मा को पवित्र बना सकता है वह तभी संभव होगा जब तप के साथ भाव शुद्ध होगे। इसदौरान पंडित रत्न रितेश मुनि व उपप्रवर्तिनी मैंनाकंवर मसासती इन्दुप्रभा आदि सभी ने सभा मे धर्म संदेश देतें हुये कहा कि परमात्मा की वाणी मे भेद नही होता है वह सबके लिये समान है इसे सुनकर भीतर मे उतारने वाला स्वयं तो तिरेगा ही वह दुसरो को भी इस वाणी के द्वारा तिरा सकता है। इसदौरान,युवाप्रणेता महेश मुनि,अखिलेश मुनि, डॉक्टर सुशील, डॉ दर्शनप्रभा, साध्वी श्रध्दा, दिप्ती प्रभा,हिरलप्रभा आदि मुनियो और साध्वी मंडल ने दोपहर स्वाध्याय और महामंत्र का जाप करवाया जाप मे पधारे सभी को धोका परिवार की ओर से सभी को प्रभावना दी गई तथा आयंबिल ओली करने वाले तपस्वियों को सामूहिक पारणा करवाया।

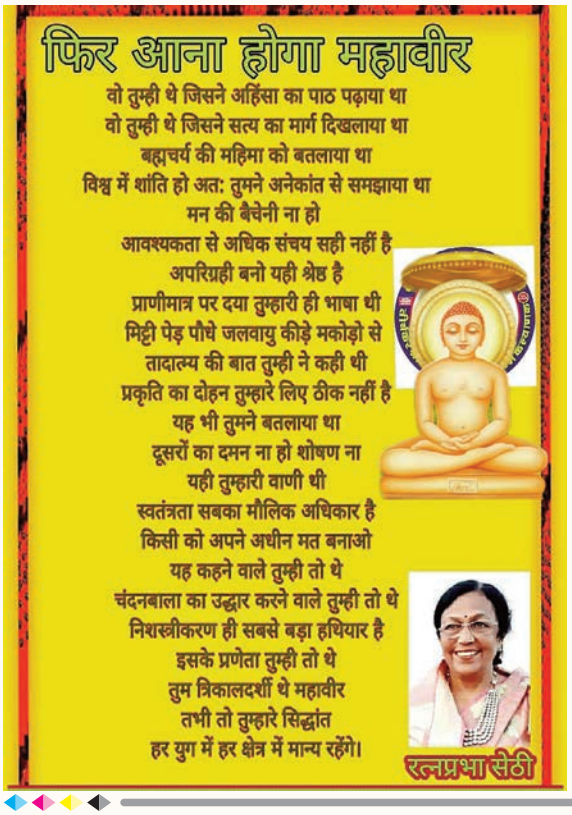

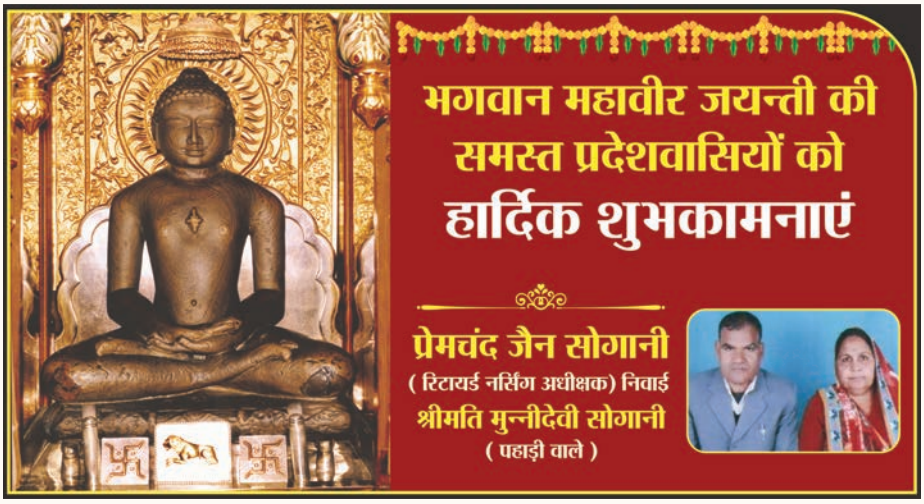

महावीर की वीतरागता

आत्म स्वतन्त्रता एवं मुक्ति का सोपान है...

शाबाश इंडिया

स्वतन्त्रता की सकारात्मकता की अवधारणा में प्रभु महावीर ने जीओ और जीने दो का सिद्धान्त दिया जिसमें सम्यक जीवन शैली से स्वयं भी सुखी रहे तथा किसी और को भी कष्ट न हो, इस अवधारणा के अनुसार स्वतन्त्रता का मूल तत्त्व आन्तरिक एवं बाह्य बन्धनों का अभाव। इसमें एक अच्छे उद्देश्य को प्राप्त करने की इच्छा छुपी हुई है। इसके लिए विकसित व्यक्तित्व का होना आवश्यक है। स्वतन्त्रता मनुष्य को मानवता के उच्च शिखर पर ले जाती है और एक परिपक्वता का निर्माण करती है । स्वतन्त्रता अपने साथ आत्मनिर्भरता का अवसर लेकर भी चलती है। किसी प्रकार के दबाव अथवा भय से मुक्त होकर मनुष्यता के नाम पर उच्च शिखर की ओर बढ़ाने के अवसर का नाम है - स्वतन्त्रता। आज की भौतिकवादी संस्कृति में स्वतन्त्रता का अर्थ स्वच्छन्दता से लिया जा रहा है। जिसमें व्यक्ति केवल अपने हिसाब से जीना चाहता है लेकिन जीने दो भूल जाता है। भले ही उसके इस दृष्टिकोण से अन्य दुःखी भी क्यों न हो? उन्हें असुविधा भी क्यों न हो? आज स्वतन्त्रता के मायने बदल गये हैं। इसकी आड़ में हम गुलामी को पोषित कर रहे हैं। भय के वातावरण में जी रहे हैं। दासता चाहे शारीरिक एवं इन्द्रियों की हो, परिवार एवं परिस्थितियों की हो, वह परतन्त्रता ही है। प्रभु महावीर ने जो स्वतन्त्रता का अर्थ दिया है वह आज के परिप्रेक्ष्य में विचारणीय है। यदि 'मैं अपूर्ण हूँ तो मुझे दूसरों का सहारा लेना पड़ेगा।' दूसरों के सहारे की अपेक्षा रखने वाला स्वतन्त्र कैसे हो सकता है ? प्रभु महावीर ने घोषणा की कि 'मनुष्य स्वभावतः पूर्ण है, व सर्वज्ञ, सुखी तथा अनन्तवीर्य सम्पन्न है। उसे किसी के आश्रय की आवश्यकता नहीं है। वह तो अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त शक्ति का धारक है । अन्तः सुख की सत्ता वाला ये जीव (मानव) भटक क्यों रहा है ? जन्म-मरण क्यों करता जा रहा है ?' उनका सिंहनाद था कि 'हे पुरुष ! तुम स्वयं अपने मित्र हो, बाहर के मित्रों की खोज में मत भटकते फिरो ।' यह आत्म - स्वतन्त्रता का उद्घोष था जो इतिहास में इतने सशक्त शब्दों में शायद ही अन्यत्र मिले। यह पुरुषार्थ का स्वर था। मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करता है। 'अप्पा कत्ता विकत्ता य, सुहाण य दुहाण य।' आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य अपनी सोई हुई शक्ति को जगाये। इस आत्म-विश्वास के स्वर में दुर्बलता के स्वर के लिए कोई अवकाश नहीं था कि कोई दूसरी शक्ति आकर हमारा उद्धार करेगी। चाहे वह शक्ति ईश्वर की दूसरी शक्ति क्यों न हो। निम्न पंक्तियाँ स्पष्ट करती हैं-

तू ही मूर्तिकार स्वयं का, तू ही है पाषाण ।
तू ही छीनी और हथौड़ा, कर खुद का खुद निर्माण ।।

प्रभु महावीर ने हमें सावधान किया कि हमारा पुरुषार्थ स्वतन्त्रता की दिशा में होना चाहिए। परतन्त्रता कोई भी हो बुरी होती है। सुख-सुविधा युक्त सोने का पिंजरा भी परतन्त्रता का प्रतीक है। आचारांगसूत्र 3.3.10 में स्पष्ट किया है कि पुरिसा ! अत्ताणमेव अभीणि गिज्झ एव दुक्खा पमुच्चसि। अर्थात हे आत्मन ! तू स्वयं ही अपना निग्रह कर, ऐसा करने से तू दुःखों से मुक्त हो जायेगा। प्रभु महावीर ने कहा-रागी नहीं विरागी बनो । विरागी बनकर वीतरागता को प्राप्त करो। यही आत्म-स्वतन्त्रता है और मुक्ति का सोपान भी। इसलिए प्रभु ने सन्देश दिया इस धरती पर आज तक किसी ने मन की हुई नहीं, इसलिए मन एवं इन्द्रियों की दासता करके गुलामी का जीवन जीने की अपेक्षा मन और इन्द्रियों को जीतने में ही जीवन की सार्थकता है। जीवन निर्माण का एकमात्र सूत्र है - वीतरागता । सभी धर्मक्रियाओं का एकमात्र लक्ष्य है - वीतरागता । वीतरागता में ही मोक्ष समाया हुआ है। वीतरागता

हे जीव! तू जिनवाणी का श्रवण कर, यह वीतरागता की ओर ले जाती है। अत: उठ! इस पर कदम बढ़ा। भविष्य मानव जाति के लिए खतरा लेकर आ रहा है, संभलने की आवश्यकता है। इस खतरे से, दोषों से, दु:खों से, जन्म-मरण के चक्रों से, राग-द्वेष के विकारों से, स्वर्ग-नरक एवं परलोक आदि से महावीर के निरपेक्ष धर्म की वीतरागता ही बचा सकती है। अत: संकल्प कर मुझे रागी नहीं, वीतरागी बनना है, मुझे स्वतन्त्र होना है, मुक्त होना है, यही आत्म - स्वतन्त्रता आधार है तथा मुक्ति का मार्ग है।

अर्थात राग का त्याग। राग का त्याग कर दिया तो द्वेष स्वतः ही छूट जायेगा और वीतरागता आ गई तो मोक्ष निश्चित है। मुक्ति की प्राप्ति वीतरागता से ही सम्भव है लेकिन वीतरागता में बाधा उत्पन्न करने वाले राग-द्वेष नामक तत्त्व हैं, जिससे व्यक्ति इनके बंधनों में बँधा रहता है। राग-बन्धन है, जेल है, जिसमें व्यक्ति कर्मों के बन्धन में जकड़ा रहता है क्योंकि राग व्यक्ति को भगवान बनने नहीं देता और द्वेष व्यक्ति को इन्सान बनने से रोकता है। व्यक्ति अनन्त शक्तियों का स्वामी है। उसमें जानने (ज्ञान) की क्षमता है, संवदेनाओं का अनुभव है (दर्शन) तथा क्रिया करने की चारित्र ताकत है । इन तीनों का दुरुपयोग ही बन्धन तथा सदुपयोग ही वीतरागता या आत्म - स्वतन्त्रता है। जिसे अपनाकर मानव राग-द्वेष, मोह, विषय - कषाय आदि समस्त दोषों एवं पराधीनता, अभाव आदि समस्त दुःखों से सदा के लिए मुक्त हो सकता है। इन्द्रियों से मिलने वाला सुख प्रतिक्षण क्षीण होता हुआ वह सुख बिखर जाता है और नीरसता में बदलकर समाप्त हो जाता है। वह सुख अक्षय, नित्य और शाश्वत नहीं है। आज हम राग एवं मोह के कारण शरीर एवं इन्द्रियों के तथा जड़ वस्तुओं के गुलाम बन रहे हैं। हम इन्हीं की दासता तक सीमित हो गये हैं। हम मोह के वशीभूत होकर गुलामों के भी गुलाम हो गये हैं और परिस्थितियों के गुलाम बन रहे हैं। मोह विकार पैदा करता है। वह जहर को जहर समझने नहीं देता, जहर को भी अमृत के रूप में प्रस्तुत करता है । इस दासता से मुक्त होने का एक ही उपाय है-वीतरागता। जो पुद्गलों के सुख को कंचन काया कामिनी और संसार सुखों को तिलाञ्जली देकर जो आत्म-साधना में तत्पर शील हो जाता है, वे ही इस जगत के सच्चे मलिक हैं। क्योंकि जो छोड़ता है वह मालिक है तथा जो पकड़ता है वह गुलाम । सम्यग्दृष्टि जीव पापों से, कषायों से बचना चाहता है क्योंकि वह जानता है राग-द्वेष की गाँठें जीवन को बर्बाद कर देगी इसलिए उन गाँठों से मुक्त रहता है। वह जानता है कामभोग, विषय - कषाय जीवन को गर्त में ढकेल देगी, झूठ-कपट, छल-फरेब जीवन में तबाही मचा देंगे इसलिए वह संयमी बना जाता है तथा वीतरागता का पथ प्रशस्त करता है। राग से वीतरागता, वीतरागता की साधना से मुक्ति प्राप्त करता है। जैसे प्रभु महावीर ने प्राप्त की । विनाशी के राग के त्याग से अमरत्व, पर के त्याग से मुक्ति, संस्कार (कर्म) के त्याग से निर्वाण की उपलब्धि होती है । बहिमुर्खी से अन्तमुर्खी होने की साधना में जैनदर्शन में वर्णित ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप रूपी साधना का, बोधदर्शन में वर्णित शील, समाधि, प्रज्ञा एवं अष्टांगिक मार्ग का तथा योगदर्शन में अष्टांग योग का समावेश हो जाता है। इन तीनों साधनों का लक्ष्य कैवल्य की उपलब्धि करते हुए निर्वाण तक पहुँचना है। ये तीनों वीतराग मार्ग का समर्थन एवं अनुसरण करते हैं। ये तीनों वीतराग साधना के रूप हैं। प्रभु महावीर की वीतरागता का मार्ग नैसर्गिक नियमों पर आधारित हैं। अतः यह सर्वजनित, सर्वदेशिक, सर्वकालिक सत्य है। यह किसी सम्प्रदाय, पंथ, जाति, वर्ण, वाद, परम्परा से बन्धा नहीं है । जो भी इसे अपनाता है, उसका कल्याण होता है। उसे तत्काल शान्ति, मुक्ति, प्रसन्नता की अनुभूति होती है । यही स्वयंसिद्ध होने का मार्ग है। इस प्रकार प्रभु के वचन हमें देशना देते हैं - हे जीव ! तू जिनवाणी का श्रवण कर, यह वीतरागता की ओर ले जाती है। अतः उठ ! इस पर कदम बढ़ा। भविष्य मानव जाति के लिए खतरा लेकर आ रहा है, संभलने की आवश्यकता है। इस खतरे से, दोषों से, दुःखों से, जन्म-मरण के चक्रों से, राग-द्वेष के विकारों से, स्वर्ग-नरक एवं परलोक आदि से महावीर के निरपेक्ष धर्म की वीतरागता ही बचा सकती है। अतः संकल्प कर मुझे रागी नहीं, वीतरागी बनना है, मुझे स्वतन्त्र होना है, मुक्त होना है, यही आत्म - स्वतन्त्रता आधार है तथा मुक्ति का मार्ग है।

पदमचन्द गाँधी
मो.-94149-67294
25, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार-बी,
गोपालपुरा, जयपुर

वेद ज्ञान

जीवन का अर्थ है महत्वाकांक्षा

महत्वाकांक्षा सबसे दृढ़ व रचनात्मक शक्ति है। जीवन का अर्थ महत्वाकांक्षा है। यह ऊर्जा और दृढ़ता का समन्वय है। जहां स्पष्ट लक्ष्य नैतिक संरचना के साथ होते हैं। जीतना या प्राप्त करना सभी को प्रिय लगता है। जीतना गति की तीव्रता को कई गुना बढ़ाता है। जीतने पर अगली बार की चुनौतियों के लिए और अधिक तैयार होने के लिए अवसर मिल जाता है। महत्वाकांक्षा सीमा पार करके अहं और लोभ में परिवर्तित हो जाती है। इससे आत्मविनाश की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। जो कुछ भी पहले से है, उससे संतुष्ट न होना ही महत्वाकांक्षा है। क्षमताओं और निपुणताओं को व्यापक करने के लिए क्रिया और आगे बढ़ने का प्रयास अनिवार्य है। चुनौतियां लेना महत्वाकांक्षा की प्रक्रिया का एक भाग है। मानव व्यवहार के सभी संवेगों में महत्वाकांक्षा सबसे शक्तिशाली है। इसमें बहुत कुछ खोना पड़ता है। चुनौतियां काम को अधिक संतोषजनक बनाती हैं। महत्वाकांक्षा सभी में पाई जाती है, पर इसकी एक पैमाना होता है जिस पर निर्भर करता है कि कितनी दूर जाने की इच्छा है और कितने में प्रसन्नता कायम रह सकती है। महत्वाकांक्षा ऊर्जा और दृढ़ता है, परंतु यह लक्ष्यों को पूर्ण करने का आमंत्रण भी है। ऊर्जा और उद्देश्य रखने वाले सफलता पाते हैं। जो माता-पिता कठिन किंतु वास्तविक चुनौतियों का सामना करते हैं, वे सफलता का अनुमोदन करते हैं, असफलता को सहज लेते हैं और उनके बच्चे अधिकतम आत्मविश्वासी होते हैं। सुख के सूत्र की यह उड़ान मूल्यवान है। मनुष्य से बड़ा सत्य कोई नहीं है। पुरुषार्थ में आस्था, विश्वास और संघर्ष की विजय का संदेश छिपा रहता है। किसी को पकड़कर कभी कोई शिखर पर नहीं पहुंचता। अपनी प्रतिभा ही लक्ष्य तक ले जाती है। वास्तविक संघर्ष इतिहास पुरुष बनाता है। विषमताओं के विष को अमृत बनाना जीवन का उद्देश्य है। चाहे जितनी सफलता मिले पर तृप्ति न होने पर भूख बढ़ती जाती है। पद किसी को भी दिया जाता है, पर उसकी पहचान बनाए रखना या उससे श्रेष्ठतर बनना कर्मयोगी ही जानते हैं। अभाव में पहचान बनाए रखना ही साधना है। प्रभाव देखने के लिए संघर्ष की आग में तपना पड़ता है। निःस्वार्थ प्रशंसा आगे बढ़ाती है।

संपादकीय

दक्षिण भारत में 'हिंदी' राजनीति का एक बड़ा मुद्दा

दक्षिण भारत में हिंदी राजनीति का एक बड़ा मुद्दा रही है। यह मुद्दा जब-तब सिर उठाता देखा जाता है। ताजा मामला तमिलनाडु में दही के पैकेट पर प्रमुखता से 'दही' लिखे जाने के निर्देश को लेकर उठा है। वहां के मुख्यमंत्री ने अपने ट्विटर पर लिखा है कि इस तरह हमारे ऊपर हिंदी थोपने का प्रयास किया जा रहा है। दरअसल, भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण ने कर्नाटक मिल्क फेडरेशन को निर्देश दिया है कि दही के पैकेट पर प्रमुखता से 'दही' मुद्रित किया जाए। इसी को लेकर विवाद छिड़ गया है। अब सुझाव आए हैं कि तमिल में दही के पर्यायवाची को कोष्ठक में लिखा जाना चाहिए। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण ने इस सुझाव को स्वीकार कर लिया है। मगर मुख्यमंत्री के ट्वीट से एक बार फिर हिंदी और दक्षिण की भाषाओं के बीच विद्वेष की चिंगारी फूट पड़ी है। हालांकि हिंदी को लेकर दक्षिण में अस्वीकार की भावना को शांत या सहज करने की कोशिशें बहुत हो चुकी हैं, खूब सारे तर्क दिए जा चुके हैं, मगर जो लोग इसे सियासी रंग दिए रखना चाहते हैं, उनके सामने सारे तर्क बेमानी हो जाते हैं। ताजा विवाद भी उसी राजनीतिक नजरिए का नतीजा है। अब दुनिया जिस तरह संकुचित हो चुकी है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, कारोबार आदि वजहों से लोगों की देश के विभिन्न हिस्सों में आवाजाही बढ़ी है। महानगरों में बड़े पैमाने पर दूसरे प्रांतों के लोग जाकर बसने लगे हैं, बस गए हैं, उसमें भाषा संबंधी ऐसी संकीर्णता मायने नहीं रखती। वैसे भी जहां तक हिंदी की बात है, बेशक उसे राष्ट्रभाषा के तौर पर देश के सभी नागरिकों के लिए अनिवार्य न बना दिया गया हो, पर इस हकीकत से आंख नहीं चुराई जा सकती कि हिंदी के बिना भारत में काम नहीं चल सकता। कोई भी कारोबारी अब यह नहीं कह सकता कि वह केवल अपनी मातृभाषा में कारोबार करेगा, हिंदी का सहारा बिल्कुल नहीं लेगा। पर्यटन उद्योग से जुड़े लोग भी ऐसी जिद नहीं पाल सकते। पालते भी नहीं। दक्षिण के राज्यों में हिंदीभाषी लोग बड़ी सहजता से अपनी भाषा में बात रख लेते हैं, वहां के लोग उनकी बात समझ भी लेते हैं। इस सच्चाई से वहां के राजनेता और प्रशासक भी अपरिचित नहीं। फिर यह समझना मुश्किल है कि वे ऐसे भाषा-विद्वेष को जिंदा ही क्यों रखना चाहते हैं। यह ठीक है कि कोई भी भाषा अपनी संस्कृति की वाहक और संरक्षक होती है, उसे विकृत करने की कोशिशों का विरोध होना ही चाहिए। मगर भाषाई खुलेपन की वजह से अगर कारोबारी विस्तार हो रहा हो, तो ऐसी जिद भी नहीं पाली जानी चाहिए। फिर भाषाएं चुपके से अपनी सहवर्ती भाषाओं से न जाने कितने शब्द, मुहावरे, प्रतिमान ग्रहण कर अपने को समृद्ध करती रहती हैं, उनके इस सहज स्वभाव में राजनीतिक अवरोध भी क्यों पैदा किया जाना चाहिए। भारतीय भाषाओं के बीच जितना विपुल अनुवाद होता है, उतना दुनिया की किन्हीं और भाषाओं के बीच नहीं होता। इस तरह बहुत सारे शब्दों का एक-दूसरे में समावेश होता चलता है।

-राकेश जैन गोदिका

तीर्थंकर महावीर के सिद्धांतो की वर्तमान प्रासंगिकता

03 अप्रेल 2023 : 2622वां जन्म कल्याणक वर्ष

शाबाश इंडिया

जैन धर्म अनादि, अनंत, शास्वत धर्म है। जैन धर्म के वर्तमान अवसर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ थे एवं अन्तिम 24वें तीर्थंकर वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर है। भगवान महावीर का जन्म 599 ई. वर्ष पूर्व क्षत्रीय कुण्डाग्राम (कुण्डलपुर-वैशाली) वर्तमान बिहार राज्य में चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन हुआ था। इनके पिता का नाम राजा सिद्धार्थ एवं माता का नाम रानी प्रियकारिणी (त्रिशला) था। राजा सिद्धार्थ नागवंश के शिरोमणि थे। इनके बचपन का नाम वर्धमान था। इन्हें अल्प काल में ही समस्त विद्याएं स्वतः प्राप्त हो गई थी। बालक वर्धमान विद्वान होने के साथ साथ शूरता, वीरता, साहस आदि अनन्य गुणों के आश्रय थे। विभिन्न विशेष क्रियाओं, गतिविधियों, कृत्य के कारण इन्हें वीर, अतिवीर, सन्मति नामों से भी जाना जाने लगा। भगवान महावीर ने 30 वर्ष की आयु में मार्गशीर्ष कृष्णा दशमी के दिन गृह त्याग कर दिया था एवं मुनि दीक्षा गृहण कर ली थी। इसके पश्चात लगातार 12 वर्ष 5 माह एवं 15 दिन तक तप, संयम एवं साम्य भाव की साधना की एवं पंचमहाव्रत धर्म- अहिंसा, सत्य, अचौर्य, अपरिग्रह व ब्रह्मचर्य धर्म को आम जन में प्रसारित किया। तदुपरान्त 30 वर्षों तक देश के विविध अंचलों में पद विहार कर महावीर स्वामी ने संत्रस्त मानवता के कल्याण हेतु धर्मोपदेश दिया। कार्तिक की अमावस्या के दिन पावापुरी में ईसा से 527 वर्ष पूर्व आपको निवार्ण प्राप्त हुआ। भगवान महावीर एक विलक्षण सम्पूर्ण जीवन दृष्टा थे। उन्होंने कर्म सिद्धांत को अपनाया, कर्म करने पर जोर दिया। यह संदेश दिया कि मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है। इस तरह ईश्वर की सत्ता की जगह हम सब में ईश्वर बनने की क्षमता का संचार किया। यह संदेश दिया कि हमारे सुख-दुख के लिए हम स्वंय ज़िम्मेदार है। हमारे द्वारा किये गये कर्मों का फल हमें स्वयं ही भोगना है। हम स्वयं अपने भाग्य विधाता है। भगवान महावीर के सभी सिद्धांत सभी युगों में जस के तस उपयोगी है। इन सिद्धांतों में से वर्तमान परिपेक्ष में अहिंसा, अनेकांतवाद व अपरिग्रह का विशेष महत्व है। भगवान महावीर ने अहिंसा के सूक्ष्म से सूक्ष रूप का व्यापक विश्लेषण किया है। अहिंसा को जीवन शुद्धि का आधार बताया है। अहिंसा परमो धरमः, जिओ और जीने दो, परस्परोप ग्रहों जीवानाम् यानि ''जीवों के परस्पर उपकार हैं।'' सभी जीव एक दूसरे पर आश्रित है। भगवान महावीर ने अहिंसा के सूक्ष्म रूप को दृष्टिगत रखते हुए इसे व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया। किसी के प्रति मन मे बुरे विचार आना, बदले की भावना से सोचना आदि को भी हिंसा की श्रेणी मे माना गया। सामान्यतया तद्नुसार ही हम प्रतिक्रिया करते है। शान्तिपूर्ण जीवन के लिए अहिंसात्मक आचरण की आवश्यकता है। सभी को जीने का अधिकार है। इस संसार मे

सभी प्राणी किसी न किसी तरह से एक दूसरे से शक्तिशाली है। एक सूक्ष्म वायरस में भी अपार शक्ति होती है। इनकी उत्पत्ति अनेक बीमारियों, जो असाध्य भी हो सकती है, को जन्म देती है। अहिंसा से इन बीमारियों से बचा जा सकता है। इसी कारण जैन धर्मावलंबियों द्वारा कपड़े से छानकर पानी पीते है। यदि संसार के तथाकथित शक्ति के केंद्र जैन धर्म के अहिंसा के सिद्धांत के ऊपरी आवरण का भी पालन कर लेवे या समझ भी ले तो विभिन्न देशों अरब - इजराइल, उत्तरी कोरिया-दक्षिणी कोरिया, चीन-ताइवान, रूस-यूक्रेन आदि देशों के बीच जारी भीषण विभित्सिका को रोका जा सकता है एवं मानव एवं प्रकृति के विनाश से बचा जा सकता है। युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है। जारी सभी लड़ाइयों का अंत अहिंसा से ही हो सकता है। अहिंसा पालन जैन धर्म का एकाधिकार नहीं है, लेकिन विश्व मार्ग दर्शक जरूर है। सभी को अहिंसा के मार्ग पर आना होगा, इसके बिना और कोई दूसरा उपाय नहीं है, यहां तक कि स्वयं का अस्तित्व भी संभव नहीं है। हिंसावादी व्यक्तित्व हमेशा डर के साए में रहता है। क्रिया की प्रतिक्रिया अवश्य होती है, यह सिद्धांत सभी पर लागू होता है। वैसे भी हमें किसी को भी मारने का अधिकार नहीं है। जैसे कि कुछ मानव मूक पशु-पक्षियों को मारकर खाना अपना अधिकार समझते है। यदि ऐसा है तो मानव अपने से निर्बल व्यक्ति को अपनी स्वार्थ पूर्ति हेतु मारने में एवं एक शक्तिशाली देश अपने से कमजोर देश को नष्ट करने से नहीं हिचकिचायेगा, ये सिलसिला चलता रहेगा और अन्ततः इस सृष्टि का विनाश हो जायेगा। लेकिन महावीर ने सह अस्तित्व की अवधारणा को जन्म देकर इस सृष्टि को विनाश मार्ग पर जाने से बचा लिया, क्योंकि वर्तमान मे बहुत से लोग भगवान महावीर के सिद्धान्तों की येनकेन प्रकारेण पालन करते ही है। जीने का हक प्राणी मात्र को है। किसी दूसरे के अच्छे जीवन की कामना से ही स्वयं का जीवन खुशहाल हो सकता है, यही सत्य है। मन, वचन और कर्म से अहिंसा को आत्मसात करने का संदेश समाज में स्थाई शान्ति के लिए महत्वपूर्ण है। भगवान महावीर ने किसी और पर विजय प्राप्त करने की बजाय, जिसकी कोई आवश्यकता भी नहीं है, स्वयं पर विजय प्राप्त करने की प्रेरणा दी। दूसरों का बुरा चाहकर कोई भी अपना भला नहीं कर सकता है। भगवान महावीर की अहिंसा के अमोघ हथियार को महात्मा गाँधी ने अपनाया और भारत को शक्तिशाली अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराया। कोरोना जैसी महामारी ने महावीर के उपदेशों की प्रासंगिकता सर्व सिद्ध कर दी है। वर्तमान महामारी के दौर में महावीर जन्म कल्याणक दिवस के अवसर पर पूरे विश्व को महावीर के सिद्धांतों से प्रेरणा लेने एवं अपनाने की आवश्यकता है। तीर्थंकर महावीर ने हमें अनेकांतवाद का दर्शन दिया। अनेकांत दृष्टि हमें सहिष्णु बनाती है, जीओ और जीने दो, सह अस्तित्व का उदार भाव प्रदान करती है। भगवान महावीर के अनुसार सबसे बड़ी बुराई वैचारिक मतभेद की है और आज दुनिया इसी कारण संघर्ष कर रही है। वैचारिक मतभेद अनेक समस्याओं की जड़ है। महावीर ने मताग्रह छोड़ने एवं विचारों मे समानता तथा सहिष्णुता पैदा करने पर बल दिया। अनेकांत का अर्थ है वस्तु को अनेक गुणों या धर्मों में देखना। अनेकेअन्ताः धम्मः यस्मिन् स अनेकांत। महावीर ने कहा कि वस्तु के अनंत धर्मों और पयार्यों को अनन्त चक्षुओं से देखो, किसी एक कोण से नहीं। अनेकांत का सिद्धान्त पारस्परिक सौहार्द को बढ़ाता है मनमुटाव, द्वेष व ईर्ष्या को दूर करता है। इस सिद्धांत को अपनाने से स्वयं, परिवार, समाज, देश व सम्पूर्ण विश्व में वैचारिक आतंकवाद का खात्मा किया जा सकता है। यह अवधारणा सभी समस्याओं का समाधान प्रदान करती है। भगवान महावीर के अपरिग्रह का सिद्धान्त सीमित संसाधनों के साथ जीवन यापन करना सिखाता है। अधिक सम्पत्ति एकत्र करने के लिए हिंसा, झूठ, चोरी तथा कुशील का सहारा लेना पड़ता है। तनाव, चिन्ता और बीमारियों की जड़ परिग्रह है। यहाँ तक कहा गया है कि दान देने के लिए भी संग्रह नहीं करना चाहिए। अतः धन- धान्यादि वस्तुओं की सीमा निश्चित करना तथा उनमें भी कम आसक्ति रखना ही अपरिग्रहाणुव्रत है। वर्तमान परिस्थियों मे कोरोना जैसी महामारी के दुष्प्रभावों से ग्रसित परिवारों को सहायता कर अपरिग्रह धर्म का पालन करने की और अग्रसर हो सकते है। हमारे पास आवश्यकता से अधिक संग्रह का हमारे रिश्तेदारों से शुरूआत करते हुए जरूरत मंदो की अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति में कर सकते है। अपरिग्रह का सिद्धांत तो यही कहता है। जैन दर्शन एक नया चिंतन देता है। सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान एवं सम्यक चारित्र रत्नत्रय सही रूप में जीवन में उतारेंगे तभी जीवन की सार्थकता होगी एवं मोक्ष मार्ग प्रशस्त होगा। व्यक्तित्व विकास के लिए ये तीनों रत्न जरूरी है। भगवान महावीर ने अपने जीवनकाल में सामाजिक कुरीतियों की समाप्ति की दिशा में इन सिद्धांतों का प्रयोग किया। उन्होंने स्त्रियों के उत्थान के लिए दासता, सामाजिक समता, समान दर्जा आदि के लिए शुरूआत की। वर्तमान में महिला सशक्तिकरण, स्वच्छता, जल संरक्षण, वृक्षारोपण, जनसंख्या नियन्त्रण जैसे अभियानों के संदर्भ में भगवान महावीर के सिद्धांत अत्यधिक प्रासंगिक हो गये है। भूकम्प, सूनामी, आतंकवाद, हिंसा, जातिवाद, लिंगभेद आदि बुराइयों पर काबू पाने के लिए महावीर के सिद्धांत सार्थकता लिए हुए है। यद्यपि भगवान महावीर ने ईसा से 599-527 वर्ष पूर्व लोगों के जीवन दर्शन की राह दिखलाई थी तथापि लगभग 2600 वर्ष पश्चात भी उनके बताये गये सिद्धांत पूर्णतः जस के तस प्रासंगिक है। कल-आज और कल हर वक़्त प्रसंगिक है।

अभी पिछले दो -तीन वर्षो में कोरोना काल में महावीर के सिद्धान्त व जैन जीवन शैली पूर्णतया कारगर रही है। जीओ और जीने दो- जिसमें मांसाहार का निषेध है- यदि हम सबने शाकाहार को अपनाया होता तो कोरोना की उत्पत्ति ही नहीं होती। सवेरे सूर्योदय से पहले उठना, गरम पानी पीना, ओम का उच्चारण करना, योग-ध्यान करना- लम्बीगहरी श्वास लेना, आध्यात्म में मन लगाना, शुद्ध व सात्विक भोजन करना, रास्ते में नहीं थूंकना- जैन साधुओं को थूंकने का त्याग होता है, अनुशासित जीवन जीना, वृक्षों को नहीं काटना एवं वृक्षारोपण करना सूर्यास्त के पश्चात भोजन ग्रहण नहीं करना आदि जैन जीवन शैली के अंग है। जैन धर्म केवल जैनियों का ही धर्म नहीं है, जैन धर्म के सिद्धान्तों की पालना करके कोई भी जैन बन सकता है एवं अपना जीवन सार्थक कर सकता है। ज्ञात रहे कि बहुत से जैन मुनि ब्राह्मण, राजपूत आदि अन्य धर्मों के मानने वाले रहे है। सभी जैन तीर्थंकर राज घराने से सम्बन्धित रहे है। क्या किसी भी जीव को मारे बिना, किसी से लड़ाई किए बिना भी कोई वीर, अतिवीर, सम्मति वीर एवं महावीर बन सकता है, कहला सकता है। जी हां, आज के जन्म कल्याणक दिवस से तो यही सीख मिलती है। इस वर्ष दीपावली पर हम सभी तीर्थंकर महावीर का 2550वां निर्वाण दिवस मनाने जा रहे हैं।

संकलन कर्ता:
भागचंद जैन मित्रपुरा,
अध्यक्ष, अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर।

सोनम पाटनी राजस्थानी फिल्म प्राईड ऑफ राजस्थान में डॉक्टर की भुमिका में

लाडनूं. शाबाश इंडिया

दिगंबर जैन समाज की सदस्य फिल्म अभिनेत्री सोनम पाटनी राजस्थानी फिल्म प्राईड ऑफ राजस्थान में डॉक्टर की अहम भूमिका में अभिनय कर रही है। राजस्थानी फिल्मों के जाने-माने निर्देशक हेमंत सीरवी तथा निमार्ता नरेंद्र बांगड़ा की राजस्थानी फिल्म प्राईड ऑफ राजस्थान की शूटिंग नागौर जिले के कुचेरा कस्बे में चल रही है। फिल्म के निर्देशक हेमंत सीरवी ने बताया कि यह फिल्म बड़े पर्दे पर पूरे राजस्थान में प्रदर्शित की जायेगी। सोनम पाटनी की हाल ही में ओटीटी प्लेटफॉर्म स्टेज एप राजस्थानी पर फिल्म मुकलावो प्रदर्शित हुई है जो काफी लोकप्रिय हो रही है। सोनम पाटनी ने बताया कि उनकी दो और राजस्थानी फिल्में मायरो व बिंदोरी भी बनकर तैयार है जो जल्द ही रिलीज होगी। सोनम पाटनी इससे पहले अनेक राजस्थानी व हिंदी फिल्मों में अभिनय कर चुकी है। उन्हें गत वर्ष राजस्थानी फिल्मों की श्रेष्ठ अभिनेत्री के अवार्ड से अलंकृत किया गया था।

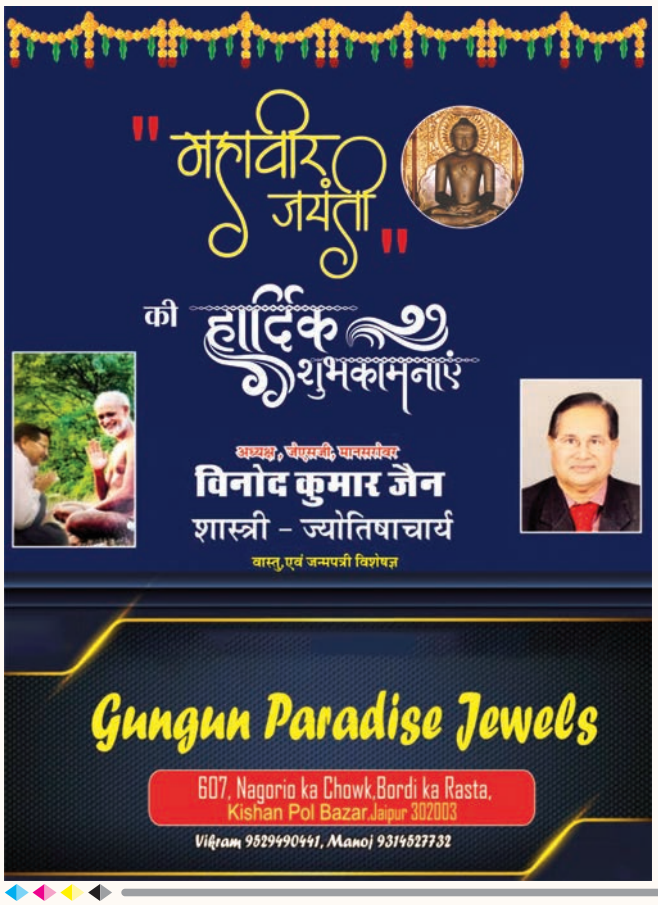

शांति नगर में भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव पर शोभायात्रा निकाली

जयपुर. शाबाश इंडिया। भगवान श्री महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक के पुर्व दिवस पर रविवार को दिगम्बर जैन समाज शान्ति नगर के श्रावको ने श्रीजी की भव्य शोभायात्रा गाजे बाजे के साथ निकाली। मन्दिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष नरेन्द्र बडजात्या ने बताया कि भगवान महावीर स्वामी की शोभायात्रा शान्तिनगर एंव बजरंग विहार के विभिन्न मार्गो से होते हुए जैन मन्दिर पर सम्पन्न हुई। सम्पूर्ण शोभायात्रा मे युवा मण्डल एंव महिला मण्डल के द्वारा भगवान महावीर के सदेंश जीवो और जीने दो के नारो से आकाश को गुंजायमान कर दिया ।मन्दिर प्रबंध समिति के मन्त्री विक्रांत मनीष अजमेरा के अनुसार भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा को प्रातः अभिषेक पश्चात 7बजे पालकी मे विराजमान कर नगर के विभिन्न मार्गो मे भ्रमण कराया। सम्पुर्ण यात्रा मे श्रावक,श्राविकाये स्वेत एंव केशरिया परिधान पहन कर भजन कीर्तन करते हुए चल रहे थे। युवा मण्डल के अध्यक्ष सुनील बिलाला एंव महिला मण्डल अध्यक्ष श्रीमती अरुणा छाबडा अपनी-अपनी टीम के साथ जुलूस मे धार्मिक स्वर लहरी बिखेर रहे थे। मन्दिर प्रबंध समिति के कोषाध्यक्ष शान्ति काला ने बताया कि भगवान श्री महावीर स्वामी की नगर वासियो ने अपने अपने घरो के बाहर आरती उतार कर श्रद्धा अनुसार भेंट चढ़ाई। शोभायात्रा की समाप्ति पर जैन पार्क के चारो तरफ इन्टरलोकीग टाईल्स नगर निगम ग्रेटर के द्वारा लगाए जाने का शुभारंभ स्थानीय पार्षद जय वशिष्ठ उपस्थिती के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य नागरिको एंव पार्षद महोदय का तिलक एंव माला पहनाकर प्रबंध समिती के उपाध्यक्ष मनोज कुमार सोगानी ने स्वागत किया । भाग चन्द नवीन छाबडा के सहयोग से समिति के सदस्य मनोज गोधा ने सभी के लिए अल्पाहार की सुन्दर व्यवस्था जैन भवन पर की।

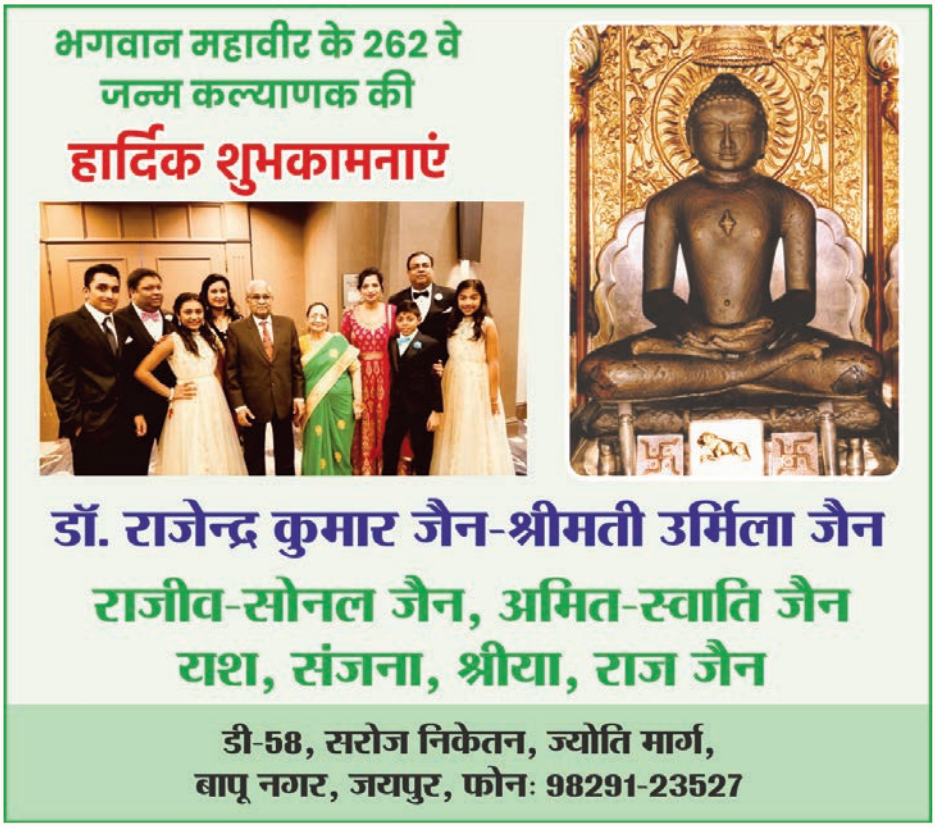

कोटा डिस्ट्रिक्ट ताइक्वांडो अकैडमी के 5 खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय प्रतियोगिता में जीते पदक

कोटा. शाबाश इंडिया। डिस्ट्रिक्ट ताइक्वांडो अकैडमी के अध्यक्ष अनिल कुमार ने बताया कि कोटा में आयोजित 36वी राष्ट्रीय सब जूनियर व 10 वी सब जूनियर व 5 वी नेशनल कैडेट ताइक्वांडो प्रतियोगिता में सब जूनियर अंडर 20 में लविष्का राठौर, अण्डर 29 में रिदम शर्मा गोल्ड, कृष्णवी गुर्जर ब्रोंज मेडल व कैडेट में राजकुमार राठौर, मनमित सिंह सिल्वर मेडल जीता। अध्यक्ष अनिल कुमार ने बताया कि राजस्थान के 10 गोल्ड 3 silver और 8 ब्रांज जीतकर फर्स्ट टाइम राजस्थान फर्स्ट चैंपियनशिप की ट्रॉफी हासिल की।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com

"महावीर जयंती" की हार्दिक शुभकामनाएं

संरक्षक
श्रीमती वंदा सेठी
93515-33650

अध्यक्ष
श्रीमती रेखा लुहाडिया
95303-83358

मंत्री
श्रीमती रानी सौगानी
94608-72268

उपाध्यक्ष
श्रीमती रेणु पाण्ड्या
99503-75057

संयुक्त मंत्री
श्रीमती रितु बोदाड
94147-31407

कोषाध्यक्ष
श्रीमती वर्षा अजमेरा
98284-12220

सांस्कृतिक मंत्री
श्रीमती सीमा सेठी
92525-86610

सांस्कृतिक मंत्री
श्रीमती रेखा पाटनी
94604-93184

प्रचार-प्रसार मंत्री
श्रीमती मोना तातेड
94143-78715

आहार चर्या मंत्री
श्रीमती प्रेम देवी नाकलीवाल
96804-29141

आहार चर्या मंत्री
श्रीमती सुशीला काला
92517-38172

कार्यकारिणी सदस्य

श्रीमती छवि जैन
94134-88906

श्रीमती सुनीता पाटोदी
99284-46860

श्रीमती पुष्पा गंगवाल
77259-93566

श्रीमती रानी सोहरा
2720505

श्रीमती नीरज पाण्ड्या
2545571

श्रीमती संगीता काला
98872-14446

श्रीमती शिल्पी काला
94143-89405

श्रीमती प्रीती पाटनी
75973-02631

श्रीमती सुशीला कासलीवाल
95874-68930

श्रीमती सीमा नाकलीवाल
95096-74244

श्रीमती माया संगही
94133-25470

श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभु महिला मण्डल
दुर्गापुरा, जयपुर

भगवान महावीर की जन्म जयंती की
हार्दिक शुभकामनाएं

अनिल-अनिता जैन
अध्यक्ष : श्री भारत वर्षीय दिगम्बर जैन युवा महासभा, जिला जयपुर

परम संरक्षकः अंतराष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन सेंटल यूथ विंग, जयपुर
सचिवः रोटरी कल्ब जयपुर नॉर्थ
राष्ट्रीय संयोजकः श्री भारत वर्षीय दिगम्बर जैन युवा महासभा (सदस्यता प्रकोष्ठ)
प्रोजेक्ट डायरेक्टरः चित्रकला प्रतियोगिता, आर.जे. ओ.
परम संरक्षकः अखिल भारत वर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद् जिला जयपुर

अध्यक्ष (टोंक रोड) : अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद
उपाध्यक्षः सखी गुलाबी नगरी
सांस्कृतिक मंत्री : श्री भारत वर्षीय दिगम्बर जैन युवा महासभा

नवकार किचन एंड हार्डवेयर नवकार इंटीरियर्स
शॉप न. 22 न्यू आतिश मार्केट, जयपुर मो. 9530297446

SPECTA
QUARTZ SURFACES
Imagination cast in stone

महावीर है जिनका नाम,
अहिंसा जिनका है नारा,
ऐसे त्रिशला नंदन को,
लाखों बार प्रणाम है हमारा

Crafted with patented technology from breton S.p.A., Italy.

Truly, it's imagination cast in stone

HAPPY
Mahavir Jayanti

Numerous colours & designs
Sturdier and safer than natural stones
Easy to care and clean
Impervious to stains and scratches
Stays safe, sanitary and bacteria-free

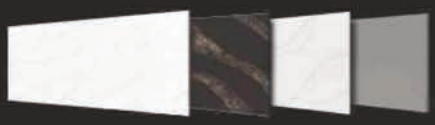

It's time to think beyond marble & granite. A superior alternative is here – Specta Quartz Surfaces. Specta is the vision that combines ARL Group's manufacturing expertise with world-renowned BretonStone technology to create SPECTAcular Quartz Surfaces at its state-of-the-art plant in Jaipur, Rajasthan. Specta offers a wide range of colours and designs to complement your imagination. Go ahead, make your creations Specta-cular with Specta Quartz Surfaces.

A unit of ARL Infratech Ltd.

www.spectasurfaces.com

Write to us at info@spectasurfaces.com | Call us on 0141 - 6706777 | Follow us on:

महावीर इंटरनेशनल रॉयल का हुआ गठन

सेवा और जीव दया से किया आगाज

ब्यावर. शाबाश इंडिया

शहर में सबकी सेवा, सबको प्यार के उद्देश्य से महावीर इंटरनेशनल की नई शाखा रॉयल का महावीर इंटरनेशनल अपेक्स के जयपुर में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में गठन हुआ । संस्था द्वारा रविवार को जीव दया एवं मानव सेवा के कार्यों के साथ आगाज किया गया। संस्था के संस्थापक चेयरमैन अशोक पालडेचा के अनुसार आज शनिवार को प्रातः सुभाष उद्यान में पक्षियों के दाना डालकर जीव दया का कार्यक्रम किया गया तथा ब्रह्मधाम में बेसहारा वृद्धजनों को भोजन कराकर मानव सेवा का कार्य कर संस्था का आगाज किया गया। संस्थापक सचिव रूपेश कोठारी ने बताया कि आज के कार्यक्रम के लाभार्थी उत्तमचंद सखलेचा की पुण्यसमृति में पंकज सखलेचा परिवार था। इस अवसर पर वीर अशोक पालडेचा, वीर रूपेश कोठारी, वीर अभिषेक नाहटा, वीर योगेन्द्र मेहता, वीर प्रदीप मकाना, वीर मनोज रांका, वीर अमित बाबेल, वीर पुष्पेन्द्र चौधरी, वीर अमित मेहता, वीर गौतम रांका, वीर हेमेन्द्र छाजेड़, वीर नरेन्द्र सुराणा गवर्निंग काउंसिल सदस्य वीर धनपत श्रीश्रीमाल एवं वीर राजेश रांका उपस्थित रहे। महावीर इंटरनेशनल रॉयल के शुभारंभ पर धनपत श्रीश्रीमाल,ज्ञानचंद कोठारी,राजेश रांका, नरेन्द्र पारख, राजू सेठिया, अनिल डोसी,जसवंत बाबेल, सुरेन्द्र कोठारी,राजू सा ओस्तवाल, अनिल श्रीश्रीमाल, पारस संचेती,गौतम संचेती, प्रकाश मकाना, रोशन मेहता,ललित मकाना, सुशील मेहता, पियूष रांका, गौतम कुमठ, आदि ने हर्ष जताते हुए पदाधिकारियों एवं सदस्यो को शुभकामनाएं दी।

भगवान महावीर का संदेश जियो और जीने दो

जैन समाज द्वारा अहिंसा रैली का आयोजन

कोटा. शाबाश इंडिया। सकल दिगंबर जैन समाज के सदस्य ओम जैन सर्राफ ने बताया कि महावीर जयंती के उपलक्ष में 2 दिन के उत्सव में पहले दिन अहिंसा रैली का आयोजन,जैन समाज ने किया, इस रैली में हजारों की संख्या में दिगंबर एवं श्वेतांबर जैन समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया और भगवान महावीर के संदेश जियो और जीने दो का नारा, महावीर ने क्या सिखाया- जिनवाणी का पाठ पढ़ाया लगाया का नारा भी लगाया। इस अवसर पर कोटा टैक्स बार एसोसिएशन के अध्यक्ष बीसी जैन बाबेल एवं जैन समाज कोटा के प्रकाश जैन दीपपुरा एवं जैन समाज कोटा के कई लोगों ने उत्साह के साथ रैली में भाग लिया।

मुख्यमंत्री गहलोत ने किया महावीर स्कूल की झांकी का अवलोकन

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री महावीर दिगंबर जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय में JITO द्वारा आयोजित अहिंसा दौड़ का आयोजन किया गया जिसमें महावीर स्कूल द्वारा बनाई गई शिखर जी की सजीव झांकी का अवलोकन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा किया गया। इस आयोजन में संस्था के अध्यक्ष उमराव मल संघी, मानद मंत्री सुनील बख्शी, कोषाध्यक्ष महेश काला,उपाध्यक्ष मुकुल कटारिया, कार्यकारिणी समिति के सदस्य विनोद कोटखावदा, राजस्थान विश्वविद्यालय के उप कुलपति डॉ. राजीव जैन एवं समाज के गणमान्य महानुभाव भी उपस्थित थे। इस दौड़ का मुख्य उद्देश्य समाज के लोगों को महावीर भगवान का अहिंसा व जीयो और जीने दो का संदेश देना ।

सखी गुलाबी नगरी

सखी गुलाबी नगरी जयपुर

अध्यक्ष: सारिका जैन

महावीर जयंती

की हार्दिक शुभकामनाएं

सचिव: स्वाति सेठी

उपाध्यक्ष सुषमा जैन

उपाध्यक्ष अनिता जैन

सह सचिव मोनिका जैन

सह सचिव ममता सेठी

सह सचिव रितु जैन

कोषाध्यक्ष नेहा जैन

सांस्कृतिक मंत्री मनीषा जैन

ग्रीटिंग कोऑर्डिनेटर रेशमा गोदिका

पीआरओ आशा जैन

कार्यकारिणी सदस्यः- सुनीता कसेरा, अंशु जैन, नीलू जैन, निकिता जैन, रानी पाटनी, नीमा सोगानी, अनिता जैन, सुनीता जैन, इंदु जैन, सरोज जैन

एवं समस्त सदस्य सखी गुलाबी नगरी, जयपुर

भगवान महावीर के 2622 वे
जन्म कल्याणक की
हार्दिक शुभकामनाएं

MPHF Rtn. Sudhir Jain
M.Com., LLB, JD

- Charter President & Trainer Rotary Club Jaipur Citizen
- President, international vaish mahasammeln jaipur central
- Founder President, Jain Citizen Foundation Trust
- F. President & Patron Lion Club Jaipur Diamond
- F. President, Jain Social Group Capital
- President: shridharam foundation.
- Dev. Officer, LIC of India, B.O.1, B.S. Road, Jaipur

A-1, Krishna nagar-II, Lal Kothi, Jaipur | 9829012639
Ph.: 0141-2744820, 4026130 | lionsudhirjain@gmail.com

भगवान महावीर
जयंती की आप सभी को
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

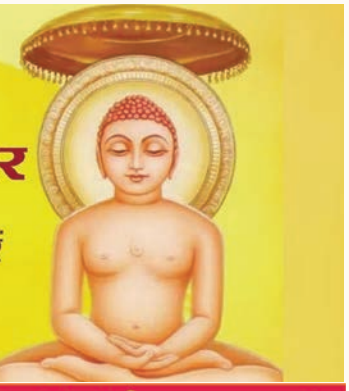

तीर्थंकर भगवान महावीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं

राजकुमार-चंदा सेठी
प्लाट नं. 91, श्री जी नगर,
दुर्गापुरा, जयपुर

संरक्षक
महिला मंडल दुर्गापुरा
*
अध्यक्ष
त्रिशला संभाग दुर्गापुरा
*
समन्वयक, टोंक रोड,
राजस्थान जैन युवा महासभा
*
प्रभारी दुर्गापुरा,
भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा महासभा

"महावीर जयंती"

की हार्दिक शुभकामनाएं

रमेश चंद्र-सुमति देवी
यश कमल-संगीता
विभोर-आयुशी अजमेरा

तीर्थंकर भगवान महावीर जयंती की
हार्दिक
शुभकामनाएं

आर. बडजात्या केटर्स
Mouth Watering Taste and High Class Catering for your memorable event.
Birthday, Engagement, Anniversary, Wedding, Mehendi, Haldi, Get-Together
एस-9, मंगल मार्ग, बापू नगर, जयपुर
मो. 9785074581, 9887866995, 8952843828

तीर्थंकर भगवान
महावीर जयंती की
हार्दिक शुभकामनाएं

नीरज जैन
महामंत्री - श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर, मुरलीपुरा
सचिव - दि. जैन सोश्यल ग्रुप फेडरेशन राज. रीजन, जयपुर
अध्यक्ष - दि. जैन सोशल ग्रुप वीर, जयपुर

भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव पर रक्तदान शिविर आयोजित

प्रकाश पाटनी. शाबाश इंडिया

भीलवाड़ा। दिगंबर जैन समाज ट्रस्ट द्वारा सकल दिगंबर जैन समाज का स्वाध्याय भवन में भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव के तहत विविध कार्यक्रम आयोजित हुए।समारोह के मुख्य अतिथि सांसद सुभाष बहेड़िया थे। शुरूआत में ज्ञानमती महिला मंडल एवं जिनेंद्र महिला मंडल ने मंगलाचरण एवं इस वंदना की प्रस्तुति दी।

सुरेंद्र कुमार छाबड़ा, सोहनलाल गंगवाल एवं राजकुमार चौधरी ने मुख्य अतिथि सांसद सुभाष बहेडिया एवं डॉ विपिन कुमार कुमावत ,नेमीचंद जैन को साफा माल्यार्पण कर स्वागत किया। अतिथियों ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम की शुरूआत की।

सांसद सुभाष बहेडिया ने कहा कि भगवान महावीर के अहिंसा परमोधर्म एवं जियो और जीने दो के सिद्धांत से देश में अमन , खुशहाली आ सकती है। उन्होंने रक्तदान शिविर का भी अवलोकन किया। इस उपरांत बहुबली जैन वेलफेयर सोसाइटी एवं सेवा ग्रुप के संयोजन में महात्मा गांधी चिकित्सालय एवं रामस्नेही चिकित्सालय की स्वास्थ्य टीम द्वारा रक्तदान शिविर में 202 रक्त दाताओं ने अपना रक्तदान देकर अनुकरणीय कार्य किया। इस अवसर पर लोटरी द्वारा दश रक्त दाताओं को प्रदीप चौधरी ने चांदी का सिक्का उपहार स्वरूप दिया। इस दौरान कई प्रतियोगिता आयोजित हुई। जिसमें डॉ नीरज के सानिध्य में स्वास्थ्य शिशु स्वास्थ्य प्रतियोगिता ग्रुप ए में प्रथम राव्या जैन, श्रुत जैन द्वितीय, रिद्धि गदिया अव्याश चंदोरिया, पुर्वाश जैन ग्रुप -2 में प्रथम ख्वाहिश जैन नित्यम जैन द्वितीय आदि जैन, कियाना जैन, आरती की थाली सजाओ मैं प्रथम नेहा वेद, द्वितीय स्वाति गंगवाल, तृतीय सोनल जारी, बेसन की मिठाई सजाओ प्रतियोगिता में प्रथम मीनू चांदीवाल , द्वितीय स्वाति गंगवाल, तृतीय विंदिया बडजात्या, कौन बनेगा रानी त्रिसला व राज सिद्धार्थ में प्रथम आरती सिंदुरिया, नेहा सिंदुरिया द्वितीय सीमा सेठी श्वेता पाटनी, तृतीय सीमा पहाड़ियां शिवानी जैन, फायर लेस कुकिंग मैं रेखा गोयल प्रथम, द्वितीय श्रुति जैन, तृतीय देशना जैन एवं रिया चंदोरिया, परंपरागत माडना में प्रथम संतोष देवी सेठी, द्वितीय सुलोचना अजमेरा, तृतीय माया देवी अग्रवाल, भगवान महावीर स्वामी पर प्रश्नोत्तरी में प्रथम स्नेहा सेठिया द्वितीय अल्पना जैन तृतीय मोना जैन, निर्वाण लाडू अष्टद्रव्य सजाओ में प्रथम मृदुला सेठी, द्वितीय अल्पना गोधा तृतीय सुनीता बाकलीवाल, एरावत हाथी सजाओ में प्रथम वर्षा सोनी द्वितीय स्वाति गंगवाल तृतीय मेघना छाबड़ा विजेता रहे। अग्रवाल उत्सव भवन सेवा सदन रोड स्थान पर आदिनाथ नवयुवक मंडल एवं समस्त महिला मंडल के संयोजन में रात्रि 7:30 बजे भव्य पालना झूलाओ एवं बधावा कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें शहर की कई महिला मंडलों ने अपने-अपने ड्रेस कोड में नाचते- गाते पालना झूलाते बधावा कार्यक्रम की सुंदर प्रस्तुति दी। जिसे देखकर सभी लोग आनंदित हुए। ट्रस्ट के सचिव प्रदीप चौधरी एवं सोसायटी के अध्यक्ष सुरेंद्र छाबड़ा ने सभी के सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया। बाहुबली जैन वेलफेयर सोसाइटी के वीरेंद्र छाबड़ा ने बताया कि 3 अप्रैल महावीर जयंती के दिन प्रातः 8:00 आमलियो की बारी से श्रीजी की शोभायात्रा स्वाध्याय भवन होते हुए मुख्य मार्गों से गुजर कर वापस आमलियो की बारी मंदिर पहुंचेगी। समापन के बाद आदिनाथ नवयुवक मंडल के संयोजन में सकल दिगंबर जैन समाज का सामूहिक भोज अग्रवाल उत्सव भवन रोडवेज बस स्टैंड के सामने रखा गया है

जेएसजी मेन व संगिनी मेन उदयपुर की नई कार्यकारणी का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

उदयपुर. शाबाश इंडिया

जैन सोशल ग्रुप मेन और जैन सोशल ग्रुप संगिनी मेन की वर्ष 2023- 25 की नवीन कार्यकारणी का शपथ ग्रहण समारोह शनिवार को अंबामाता स्वाध्याय भवन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मेवाड़ रीजन चेयरमैन अनिल नाहर, समारोह अध्यक्ष राजेंद्र वोरा उपाध्यक्ष जेएसजीआईएफ ओवरसीज, विशिष्ट अतिथि मेवाड़ रीजन संस्थापक चेयरमैन ओ पी चपलोत, मेवाड़ रीजन निवर्तमान चेयरमैन मोहन बोहरा, जेएसजी आईं एफ के पूर्व उपाध्यक्ष आर सी मेहता एवं प्रख्यात भजन गायक विपिन जी पोरवाल थे। कार्यक्रम में जेएसजी के नए दम्पत्ति सदस्यों का शपथ ग्रहण मोहन जी बोहरा द्वारा करवाया गया साथ ही जेएसजी मेन के पदाधिकारी व नवीन कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण अनिल जी नाहर द्वारा सम्पन्न करवाया गया। अमेरिका से पधारे हुए जेएसजीआईएफ ओवरसीज के उपाध्यक्ष राजेंद्र जी वोरा ने संगिनी के पदाधिकारी व कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण करवाया।जैन सोशल ग्रुप मेन की नवीन कार्यकारणी में अध्यक्ष शांतिलाल मेहता, उपाध्यक्ष केएस नलवाया,सचिव कमल कोठारी, सह सचिव गौतम नागौरी एवं कोषाध्यक्ष राजेंद्र खोखावत चुने गए।इसी प्रकार जैन सोशल ग्रुप संगिनी मेन से अध्यक्ष डॉ.प्रमिला जैन, उपाध्यक्ष उर्मिला जैन,सचिव स्नेहलता पोरवाल, सह सचिव कमला नलवाया व कोषाध्यक्ष गुणबाला जैन चुने गए। निवर्तमान अध्यक्ष ख्याली लाल जी सिसोदिया उर्मिला शिशोदिया ने नवीन कार्यकारिणी को बधाइयां दी व उज्जवल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम का सफल संचालन अंकित खोखावत द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में मेवाड़ रीजन के पदाधिकारी विभिन्न जैन सोशल ग्रुप के पदाधिकारी एवं संगिनी के पदाधिकारी उपस्थित थे।

महावीर जैन नवयुवक संघ ने भगवान महावीर जन्मकल्याणक के अवसर पर किये सेवा कार्य

अमित गोधा. शाबाश इंडिया

ब्यावर। महावीर जैन नवयुवक संघ ब्यावर द्वारा भगवान महावीर जन्म कल्याणक के पावन अवसर पर जीवदया एवं मानव सेवा के कार्य किये गए। मंत्री अशोक पालडेचा ने बताया कि संस्था सेवा कार्यों में सदैव अग्रणी रहती हैं। संस्था द्वारा महावीर कुमार जी अमित कुमार जी आशीष कुमार जी भंडारी परिवार के सहयोग से सुभाष उद्यान में स्थित पक्षी शाला में पक्षियों हेतु पक्षी दाने का वितरण एवं रसाल कंवर जी माणकचंद जी बाबेल की पुण्यस्मृति में जसवंतराज जी ललित जी अमित जी किशोर जी धैर्य जी परिवार के सहयोग से महावीर अन्न क्षेत्र में जरूरतमंद व्यक्तियों को भोजन वितरण किया गया। इस अवसर पर संस्था मंत्री अशोक पालड़ेचा, कोषाध्यक्ष अनिल डोसी, सहमंत्री प्रदीप मकाना, वरिष्ठ सलाहकार जसवंत बाबेल, महावीर भंडारी, दीपचंद नाहटा, प्रवीण बडोला, अमित बाबेल, सुशील छाजेड़, समुन्द्र बड़ोला इत्यादि सदस्य उपस्थित थे।

अच्छी भावना का परिणाम अच्छा होता है : आचार्य वसुनंदी महाराज

आचार्य वसुनन्दी महाराज ससंघ का पार्श्वनाथ भवन में जयकारों के बीच हुआ भव्य मंगल प्रवेश-पांच बत्ती से हुआ जुलूस रवाना

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान जैन सभा द्वारा आयोजित भगवान महावीर के जन्म कल्याणक महोत्सव (महावीर जयंती समारोह) में सानिध्य प्रदान करने हेतु आचार्य वसुनंदी महाराज ससंघ का रविवार को पार्श्वनाथ भवन में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। इस मौके पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु गण शामिल हुए। इससे पूर्व आचार्य श्री 14 पिच्छिका ससंघ का मंगल प्रवेश जुलूस पांच बत्ती स्थित राजमंदिर सिनेमा से पार्श्वनाथ भवन के लिए रवाना हुआ। राजस्थान जैन सभा जयपुर के महामंत्री मनीष बैद ने बताया कि जुलूस एम आई रोड,न्यू गेट, चौड़ा रास्ता होते हुए नाटाणियों का रास्ता स्थित पार्श्वनाथ भवन पहुंचा जहां आचार्य श्री ससंघ में धर्म सभा का आयोजन हुआ।

कृषि मंत्री लालचन्द कटारिया ने रवाना की महावीर जयंती प्रभात फेरी

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन धर्म के 24 वे तीर्थंकर और वर्तमान शासन नायक महावीर स्वामी की जन्म जयंती के अवसर पर आज प्रदेश के कृषि एवं पशुपालन मंत्री लालचन्द कटारिया ने अपने विधानसभा क्षेत्र झोटवाड़ा में निम्बार्क तिराहा-धाबास एवं नेमीसागर कॉलोनी में स्थानीय जैन समाज द्वारा आयोजित प्रभात फेरियों में शिरकत की एवं ध्वज दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर वैशाली नगर ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष जितेन्द्र कायथवाल एवं विधान सभा के सहायक सम्पादक और सामाजिक कार्यकर्ता जय कुमार जैन-बड़जात्या भी मौजूद रहे।

नेटथियेट पर सजाई कौस्तुभ की बसंत बहार

कूक सुनाए कोयलिया रूत फागुन की आई

जयपुर. शाबाश इंडिया

नेटथियेट कार्यक्रमों की श्रृंखला में आज युनाईटेड अरब अमिरात; यूएई से आये शास्त्रीय गायक 'कौस्तुभ कांति गांगुली' ने जब अपने मधुर कण्ठ से राग ललित पंचम के सुर छेडे तो सुर की सरीता बह उठी। नेटथियेट के राजेन्द्र शर्मा राजू ने बताया कि कलाकार गांगुली ने अपने कार्यक्रम की शुरूआत ललित पंचम से की जिसमें फूली बसंत बहार प्यारे नजर छब आई मन में मध्य विलंबित लय तीन ताल में प्रस्तुत की। कौस्तुभ ने द्रुत तीन ताल में एक बंदिश कूक सुनाए कोयलिया रूत फागुन की आई जिया हरकाई सुनाकर दर्शकों की वाह-वाही लूटी। इन दानों कंपोजिशन को संगीतबद्ध स्व.पण्डित ज्ञान प्रकाश घोष ने किया। कार्यक्रम के अंत में राग मांझ खमाज में होरी ठुमरी और राग भैरवी सुनाकर कार्यक्रम को उंचाईयां दी। ज्ञात रहे कि कौस्तुभ कांति गांगुली न्यूयार्क युनिवर्सिटी में एसोसियेट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं देश-विदेश में कार्यक्रम प्रस्तुत कर भारतीय संगीत से दर्शकों को जोड रहें है। अभी हाल ही भारत प्रवास पर अपना शास्त्रीय कार्यक्रम नेटथियेट पर दिया। आपने ऑल इण्डिया रेडियो की प्रतियोगिता 2011 के विजेता रहे तथा मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर, आई टी सी संगीत रिसर्च अकादमी एवं एनसीपीए मुंबई से स्कॉलरशिप प्राप्त की है।